Research Paper | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2020

600 ई0 पूर्व से मौर्यकाल तक की धार्मिक स्वतंत्रता का मूल्यांकन

श्याम कुमार [1]

[1] इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- 110068

ABSTRACT:

KEYWORDS:

SUBJECT: इतिहास

600 ई0 पूर्व से मौर्य वंश तक के काल की धर्म की स्वतंत्रता का अध्ययन करते हैं तो कुछ विशिष्ट नजर आता है। यह विशेषता व्यक्तिगत स्वतंत्रता का बोध कराता है क्योंकि उस समय की प्राचीन इतिहास का अध्ययन करते हैं। तो उस समय अनेक संप्रदाय का उदय हो चुका था ।जिसमें ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत शैव, वैष्णव थे ,तो नास्तिक संप्रदाय के तहत जैन एवं बौद्ध प्रमुख थे ।इसके अलावा कुछ और भौतिकवादी चिंतन का विकास भी हो चुका था ।अगर हम इस प्राचीन समय का अध्ययन करते है तो समाज में एक विशिष्ट धार्मिक स्वतंत्रता का बोध होता है।

प्राचीन काल के समाज के लोग न सिर्फ उन संप्रदाय को अपनाया ।अपितु वे अपने आस्था के इतर दूसरे संप्रदाय का सम्मान किया एवं उसमें बढ़-चढ़कर भागीदार बने। छठवीं शताब्दी ई0पू0 में धार्मिक सद्भावना का प्रथम उदाहरण मिलता है ।बिहार के बैठदीप के एक ब्राह्मण बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अवशेष का एक भाग प्राप्त किया तथा उस पर स्तूप का निर्माण करवाया। इससे स्पष्ट होता है कि उस काल के ब्राह्मणों की आस्था महात्मा बुद्ध में थी। अपने सद्भावना एवं स्वतंत्रता के अंतर्गत उन्होंने स्तूप का निर्माण करवाया।

प्राचीन काल में विभिन्न शासकों का व्यक्तिगत धर्म अलग-अलग था ।एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों का धर्म अलग-अलग था ।यह विशेषता प्राचीन काल की सबसे विशिष्ट विशेषता थी जो कि वर्तमान समय में नजर नहीं आती है। उदाहरण के तौर पर बिंबिसार को ले सकते हैं। हर्यक वंश के शासक बिंबिसार बुद्ध से मिलने के बाद बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था तथा वेणुवन नामक उद्यान बद्ध तथा संघ को प्रदान किया। जिसके बारे में जानकारी विनयपिटक से मिलती है किंतु बिंबिसार जैन एवं ब्राह्मण धर्म के प्रति भी उदार दृष्टिकोण रखता था। बिंबिसार का पुत्र अजातशत्रु की धार्मिक नीती भी उदार थी।

बौद्ध तथा जैन दोनों धर्म उसे अपने अपने मत का अनुयाई मानते हैं। अजातशत्रु सबसे पहले जैन धर्म को मानता था परंतु बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया। अजातशत्रु के बाद उसका पुत्र उदयभद्र मगध की गद्दी पर बैठा । जो जैन धर्म का अनुयाई था।

नंद वंश के शासक भी जैन मत के पोषक थे। मुद्राराक्षस से भी पता चलता है कि नंद शासक जैन धर्म को स्वीकार किया था।

आगे मौर्य काल में भी व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता एवं धार्मिक सद्भाव चलता रहा । चंद्रगुप्त मौर्य व्यक्तिगत रूप से जैन संप्रदाय को मानने वाला था। जैन परंपराओं के अनुसार अपने जीवन के अंतिम दिनों में वह जैन हो गया तथा भद्रबाहु की शिष्यता ग्रहण कर ली। 298 ई0 पू0 के लगभग उसने जैन विधि से उपवास पद्धति द्वारा प्राण त्याग किया। इसे जैन धर्म में सल्लेखना कहा जाता है। चंद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिंदुसार ब्राह्मण धर्म का अनुयाई था। दिव्यावदान से यह पता चलता है कि उसकी राजसभा में आजीवक संप्रदाय का एक ज्योतिषी निवास करता था। यहां यह बात ध्यान देने वाली है कि चंद्रगुप्त जैन था उसका पुत्र बिंदुसार ब्राह्मण धर्म का अनुयाई था। साथ ही अजीबको के प्रति उसका झुकाव था ।आगे चलकर बिंदुसार का पुत्र सम्राट अशोक अपने प्रारंभिक वर्षों में ब्राह्मण धर्म का अनुयाई था। राजतरंगिणी को आधार पर यह कहा जा सकता है कि अशोक पहले शिव का उपासक था। दिव्यावदान के अनुसार अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु ने करवाया ।अगर हम पूरे घटनाक्रम का परीक्षण करें तो उस काल में व्यापक रूप से व्यक्तिगत

धार्मिक स्वतंत्र ज्ञात होती है। एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों का अलग-अलग धर्म का उपासक होना एक विशिष्ट लक्षण का बोध कराता है।

इस काल में न सिर्फ शासक वर्ग ही अपने धार्मिक स्वतंत्रता हेतु उन्मुक्त थे। बल्कि पूरा समाज भी उन्मुक्त था। तभी तो इस काल में ब्राह्मण धर्म के अलावा विभिन्न नास्तिक संप्रदाय के साथ भौतिक चिंतकों का भी बोलबाला था ।हालांकि इस स्वतंत्रता का विभिन्न कारण हो सकता है।

REFERENCES

1. विनय पिटक
2. महापरिनिर्वाण सूत्र
3. मुद्राराक्षसः - विशाखदत्त
4. दिव्यावदान
5. राजतरंगिणी

श्याम कुमार

कमरा मोहल्ला चंदवारा , बनारस बैंक चौक, मुजफ्फरपुर (बिहार) पिन कोड -842001